ISSN: 2455 - 927X

EIJO: Journal of Humanities, Social Affair, Management and Innovative Research (EIJO– JHSAMIR)

Einstein International Journal Organization (EIJO)

Available Online at: www.eijo.in

Volume – 3, Issue – 3, May - June - 2018, Page No. : 01 - 04

शिक्षा क्षेत्र में शैक्षिक अनुसंधान की आवश्यकता व उसकी उपयोगिता

कीर्ति सिंह

शिक्षाशास्त्र शोध छात्रा

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय

जौनपुर उ0प्र0

सारांश – शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार ज्ञान तथा विकास को सकारात्मक रूप प्रदान कर उसे समाज के अनुकूल बनाना है। शिक्षा में विभिन्न प्रकार के अनुसंधान के द्वारा शिक्षण क्रियाओं के मध्य आने वाले समस्याओं या वाधाओं को दूर कर उनके मार्ग को सरल बना देते है। शिक्षण की समस्याओं तथा बालकों के व्यवहार के विकास सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने वाली प्रक्रिया को शिक्षा अनुसंधान कहते हैं।

शैक्षिक अनुसंधान के द्वारा ही मौलिक प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किया जा सकता है समस्याओं का समाधान किया जा सकता है इसके द्वारा नवीन ज्ञान में वृध्दि की जाती है। यह अन्य विषयों में किए जाने वाले अनुसंधान से भिन्न है। अन्य विषयों के अनुसंधानों में नवीन ज्ञान की वृध्दि को ही महत्व दिया जाता है, जबकि शैक्षिक अनुसंधानों में नवीन ज्ञान की वृध्दि के साथ उसकी उपयोगिता भी होनी आवश्यक है। यदि नवीन ज्ञान है परन्तु उसकी वर्तमान में कोई उपयोगिता नही है तो वह शैक्षिक अनुसंधान के अन्तर्गत नही आता है।

मुख्यशब्द– शैक्षिक विकास, शैक्षिक अनुसंधान, आर्थिक, विकासात्मक अनुसंधान, शिक्षा की प्रक्रिय.

परिभाषाएँ

एफ0एल0 भिटनी– ''शिक्षा अनुसंधान का उद्देश्य शिक्षा की समस्याओं का समाधान करके उसमें योगदान करना है। जिसमें वैज्ञानिक विधि दार्शनिक विधि तथा चिन्तन का प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिक स्तर पर विशिष्ट अनुभवों को मूल्यांकन व्यवस्था की जाती है। इसके अन्तर्गत परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया जाता है। इसकी पुष्टि से सिध्दान्तों का प्रतिपादन होता है। इसमें निगमन चिन्तन किया जाता है। दार्शनिक शोध विधि में व्यापक समान्यीकरण किया जाता है, जिससे सत्य एवं मूल्यों को प्रतिस्थापित किया जाता है।''

मुनरों के द्वारा– ''शिक्षा अनुसंधान का अंतिम लक्ष्य सिध्दान्तों का प्रतिपादन करना और नवीन प्रक्रियाओं का विकास करना।''

डब्लू0एम0 ट्रेवर्स– ''शिक्षा अनुसंधान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास करती हैं।''

शिक्षा अनुसंधान के पुमुख मानदण्ड–

- **शिक्षा के क्षेत्र में नवीन तथ्यों की खोज करना नवीन सिध्दान्तों एवं सत्यों का प्रतिपादन करना तथा नवीन ज्ञान की वृध्दि करना।**
- **नवीन ज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगिता होनी चाहिए, जिससे शिक्षण अभ्यास में सुधार तथा विकास करके उसे प्रभावशाली बनाया जा सकें।**
- **शिक्षा अनुसंधान की समस्या क्षेत्र शिक्षण बालक का विकास करना।**
- **शिक्षा अनुसंधान की समस्या का स्वरूप इस प्रकार हो, जिसका प्रत्यक्षीकरण किया जा सकें तभी उसकी उपयोगिता हो सकें।**

शैक्षिक विकास एवं प्रगति के लिए शैक्षिक अनुसंधान का अपना विशेष महत्व है। यह सामान्यतः शिक्षा के क्षेत्र में उपजी समस्याओं को हल करने में सहायक होता है। शिक्षा के विकास के स्वरूप को ज्ञात करने तथा वर्तमान शिक्षा से जुड़ी समस्याओं को आंकने के लिए ऐतिहासिक, वर्णनात्मक विषय वस्तु विश्लेषण आदि उपागमों का प्रयोग किया जाता है। शैक्षिक अनुसंधान की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अर्न्त अनुशासन उपागम पर बल दिया जाता है। शैक्षिक अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न कमी को दूर करने के लिए प्रयोगात्मक अभिकल्पों को अपनाया जाता है और उपयुक्त सांख्यिकियों का प्रयोग भी किया जाता हैं फिर भी इन अनुसंधानो से प्राप्त हाने वाले परिणाम शुध्द होते हुए भी विज्ञान अनुसंधान से प्राप्त परिणाम की अपेक्षा अशुध्द ही होते है। शैक्षिक अनुसंधान में यांत्रिक उपकरणों का प्रयोग असंभव नही है परन्तु बहुत कठिन

अवश्य है। इसके अन्तर्गत आंकड़ो को एकत्रित करने के लिए मापकों का प्रयोग किया जाता है, वे प्रायः गुणात्मक प्रकृति के होते है अतः इन अनुसंधानों से प्राप्त परिणाम की प्रकृति भी गुणात्मक होती हैं।

प्रकार–

- **ऐतिहासिक**
- **प्रयोगात्मक**
- **सर्वेक्षणात्मक**

शिक्षा अनुसंधान की आवश्यकता–

- ज्ञान संचित किया जाता है।
- ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार किया जाता है।
- ज्ञान की वृध्दि की जाती है।
- मौलिक प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने हेतु
- मौलिक तथा स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु
- शिक्षणशास्त्र के सिध्दान्तों का मूल्यांकन करना
- भारतीय शिक्षा का प्रारूप अपनाने हेतु
- कक्षा शिक्षण प्रभावशाली बनाने हेतु
- पाठ्यक्रम एवं पुस्तकों का मूल्यांकन करने हेतु
- माध्यमों की सार्थकता एवं उपयोगिता का मूल्यांकन करने में
- विद्यालय प्रबन्धों का मूल्यांकन करना
- शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सामान्य अध्ययनों की अपेक्षा सूक्ष्म तथा विकासात्मक अध्ययनों की आवश्यकता है।
- छात्रों में नैतिक गुणों, मूल्यों तथा भावनात्मक पक्षों के विकास की आवश्यकता के लिए
- शिक्षा आयोग तथा शिक्षा समितियों के लिए
- शिक्षा में सुधार एवं परिवर्तन की आवश्यकता के क्षेत्र

शिक्षा अनुसंधान के उद्देश्य–

- **सैध्दान्तिक–** शिक्षा अनुसंधान के अन्तर्गत वैज्ञानिक शोध कार्यो के द्वारा नए सिध्दान्तों का प्रतिपादन किया जाता है। इसमें शोध कार्य व्याख्यात्मक होते है। इसमें चरों के सहसम्बन्धों की व्याख्या की जाती है। इसके अन्तर्गत नवीन ज्ञान की वृध्दि की जाती है जिसका प्रयोग शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनानें में किया जाता है।
- **तथ्यात्मक उद्देश्य–** शैक्षिक शोध में ऐतिहासिक अनुसंधान के द्वारा नए तथ्यों की खोज की जाती है इनके आधार पर वर्तमान को समझने में आसानी हो जाती है। इन उद्देश्यों की प्रकृति वर्णनात्मक होती है क्योकि तथ्यों की खोज कर उनका वर्णन किया जाता है। नवीन तथ्यों की खोज शिक्षा प्रक्रिया के विकास व सुधार में सकारात्मक भूमिका निभाती है।

सत्यात्मक उद्देश्य का प्रतिमान– शैक्षिक अनुसंधान में दार्शनिक खोज के द्वारा नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है। इसकी प्राप्ति अंन्तिम प्रश्नों के उत्तरों में की जाती है। दार्शनिक शोध के माध्यम से शिक्षा के उद्देश्यों, सिध्दान्तों शिक्षण विधियों तथा पाठ्यक्रम की रचना की जाती है। शिक्षा की प्रक्रिया के अनुभवों का चिन्तन बौध्दिक स्तर पर किया जाता है, जिसके माध्यम से नवीन सत्यों को प्रतिस्थापित किया जाता है।

उपयोगिता का उद्देश्य– शिक्षा अनुसंधान के निष्कर्षो का व्यवहारिक प्रयोग होना चाहिए, परन्तु कुछ शोध केवल उपयोगिता को ही महत्व देते है। ज्ञान के क्षेत्र में इनका महत्व नहीं होता है। इन्हें विकासात्मक अनुसंधान कहते है। क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार

© 2018 EIJO, All Rights Reserved

तथा विकास किया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है इनका उद्देश्य व्यवहारिकता पर आधारित होता है। स्थानीय स्तर पर आने वाली समस्याओं के समाधान से भी इस उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है।

शैक्षिक अनुसंधान के कार्य–

- शिक्षक अनुसंधान का प्रमुख कार्य शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार करना तथा उसका विकास करना यह कार्य ज्ञान के प्रसार से किया जाता है।
- शिक्षा प्रक्रिया की विकास के लिए आन्तरिक प्रयास नवीन ज्ञान में वृध्दि करना तथा वर्तमान ज्ञान में विकास करना।
- शैक्षिक विकास का सम्बन्ध प्रायः विभिन्न पक्षों से है– शिक्षा के विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान में वृध्दि करना उसमे सुधार तथा उसका प्रसार करने से है। शिक्षा क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का समाधान करना तथा छात्रों के अधिगम को सरल बनाना। शिक्षण का प्रभावशाली प्रविधियों से विकास करना। शिक्षा प्रशासन तथा शिक्षा प्रणाली में अनुसंधान प्रक्रिया द्वारा सुधार तथा विकास करना।

शिक्षा अनुसंधान की प्रकृति या विशेषताएँ–

- शोध कार्य का मुख्य आधार शिक्षा दर्शन होता है। शिक्षा की वैज्ञानिक प्रक्रिया भी दर्शन पर आधारित होती है।
- शिक्षा अनुसंधान कल्पनाशक्ति और अर्न्तदृष्टि पर आधारित होती है।
- शैक्षिक अनुसंधान में अतःअनुशासन का प्रयोग किया जाता है।
- इस अनुसंधान में निगमन तार्किक चिन्तन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है।
- शिक्षा में अनुसंधान भौतिक विज्ञान के शोध कार्य उतना पूर्ण रूप से शुध्द नहीं होता क्योंकि न्यादर्श जनसंख्या का शुध्द रूप में प्रदर्शन नहीं करता है।
- शिक्षा अनुसंधान केवल विशषज्ञों के द्वारा नही अपितु किसी के द्वारा छात्र शिक्षक को भी शोध कार्य करने की अनुमती होती है।
- यह अनुसंधान व्यक्तिनिष्ठ है यह सामाजिक तथ्यों पर आधारित होती है इसमें सामाजिक व व्यवहारिक तथ्यों का मापन अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।
- शैक्षिक अनुसंधान में परिमाणात्मक की अपेक्षा गुणात्मक अधिक होती है। जबकि विश्लेषण में सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है।
- इसमें यांत्रिक प्रक्रिया का प्रयोग नही किया जा सकता। नवीन मौलिक शोधकार्यो द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में योगदान किया जाता हैं। इसके लिए नवीन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है।
- शैक्षिक अनुसंधान में कारण–प्रभाव की पारस्परिक निर्भरता का अध्ययन किया जाता हैं। वह निश्चित किया जाता है, क्यो प्रभाव पड़ा और क्या कारण है ?

शैक्षिक अनुसंधान के उपकरण–

- **उपकरण द्वारा उद्देश्यों को पूर्ण करना**
- **उपकरण की विश्वसनीयता**
- **परीक्षण पुनर्परीक्षण**
- **समान्तर रूप विश्वसनीयता**
- **अर्ध विभाजन विधि**
- **उपकरण की वैधता**
- **विषयवस्तु की वैधता**
- **भविष्यवाणी की वैधता**
- **सम वैधता**
- **उपकरण क वस्तुनिष्ठता**
- **व्यापकता**

© 2018 EIJO, All Rights Reserved

- **विभेदीकरण**

शैक्षिक अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्र–

- **शिक्षा दर्शन–** दर्शन जीवन के अनुभव एवं चिन्तन का निचोड़ होता है। दर्शन के द्वारा जीवन के मूल्यों का निर्धारण किया जाता है। शिक्षा में भी दर्शन का योगदान उसका मार्ग प्रशत्र करती है। पाश्चात्य प्रभाव को कम करने के लिए शिक्षा में दर्शन की उपयोगिता और भी अधिक आवश्यक हो जाती है।
- **शैक्षिक समाजशास्त्र**
- **शैक्षिक मनोविज्ञान**
- **अध्यापक प्रशिक्षण एवं शिक्षण तंत्र**
- **शैक्षिक प्रशासन**
- **पाठ्यक्रम की रचना।**
- **शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन**
- **वित्त प्रबन्ध**
- **शिक्षा इतिहास**

शैक्षिक अनुसंधान के उद्देश्य

1.व्यक्तिगत उद्देश्य	**2.व्यवहारिक उद्देश्य**	**3.बौध्दिक उद्देश्य**
1.व्यक्तिगत आवश्यकता 2.स्वयं के ज्ञान का स्तर ज्ञात करना 3.अनुसंधान द्वारा आर्थिक लाभ प्राप्त करना 4.प्रतिष्ठा प्राप्त करना	1.पूर्व तथ्यों की जांच करना। 2.प्राप्त परिणामों को लागू करना।	1.समस्या का समाधान खोजना 2.कार्य–कारण सम्बन्धों का ज्ञान 3.समय के साथ ज्ञान की अधिक परिवकृत करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- गुप्ता, एस0पी0, ''अनुसंधान संदर्शिका'', शारदा पुस्तक भवन यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबादः2015
- भटनागर, आर0पी0, एण्ड मीनाक्षी, ''व्यवहार विज्ञानों में अनुसंधान के प्रयोगात्मक आकल्प, लायल बुक डिपो, मेरठ–1993।
- राम पारसनाथ, ''अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2010–11।

© 2018 EIJO, All Rights Reserved